डॉ. प्रेमचंद पाण्डेय 'प्रेम किरण' की गजलें

(1)

हम इधर हर पहर जब तरसते रहे,
वे उधर क्यूँ हमेशा बरसते रहे।

क्यूँ ये सावन बना जेठ मेरे लिए,
दूर होकर कहीं हम सुलगते रहे।

बात करते रहे जो बड़े मूल्य की,
देवपति बन अहिल्या को छलते रहे।
वे थके, खोद खाई हमारे लिए,
हौसले से मगर हम सम्भलते रहे।

लाख आई मुसीबत, डिगे हम कहाँ,
देख मौका सभी क्यूँ बदलते रहे।

'प्रेम' वे ही चढ़े सीढ़ियाँ जल्द ही,
बाप 'गदहे' तलक को जो कहते रहे।

(2)

तेज़ कितनी वक़्त की रफ़्तार है,
आधुनिकता का उठा जब ज्वार है।

डूब जाएगी नदी में नाव वह,
प्यार की नहीं जिसमें पतवार है।

सावधानी ज्यों हटी, घटना घटी,
किन्तु सोया आज चौकीदार है।

बाग़ में बैठी वहीं जाकर ख़िज़ाँ,
जिस जगह पर नफ़रतों का ख़ार है।

सो रहे बच्चे यहाँ खाए बिना,
बेख़बर इस ख़बर से सरकार है।

न्याय की उम्मीद कैसे हम करें,
जबकि रहजन ही बना मुख़्तार है।

दे रहे हैं प्यार का नारा वही,
हाथ में जिनके दिखी तलवार है।

शब्द क्रांति
अंतर्राष्ट्रीय मासिक पत्रिका
www.shabdkrantipatrika.in

जब ख़ुदा ने ही बनाया हर किसी को,

फिर खड़ी क्यूँ बीच में दीवार है।

पता -उर्दू *बाज़ार लेन, सराय, भागलपुर (बिहार) – 812002*

मो.: 9199003205

बलजीत सिंह की ग़ज़ल

यार अपनी पीर भी।

अपनी ही जागीर है।

अश्क़ से इसको पढ़ो।

दर्द की तहरीर है।

प्यासे रहकर ही सुनो।

प्यास की तक़रीर है।

सर चढ़े तो क्या कहूँ?

सरफ़िरी तक़दीर है।

कच्चे धागे सी लगे।

ज़िन्दगी जंज़ीर है।

हाँसी (हिसार) , हरियाणा

तान्या सिंह की ग़ज़ल

बहुत लोग बारिश के आते हुए
रो लेते हैं आँखें बिछाते हुए

थकन इतनी है ज़िन्दगी से उसे
है मायूसी ज़िंदा बताते हुए

बहुत चोट लगती है आवाज़ को
दिवारों में रस्ता बनाते हुए

मेरा दिल नहीं लग रहा जीने में
तेरा साथ झूठा निभाते हुए

मज़ा लेना ही पड़ता है जख़्म का
दवा शायरी को बनाते हुए

तेरी बददुआ का असर इतना है
मुझे डर है पौधा लगाते हुए

गोरखपुर - उत्तर प्रदेश